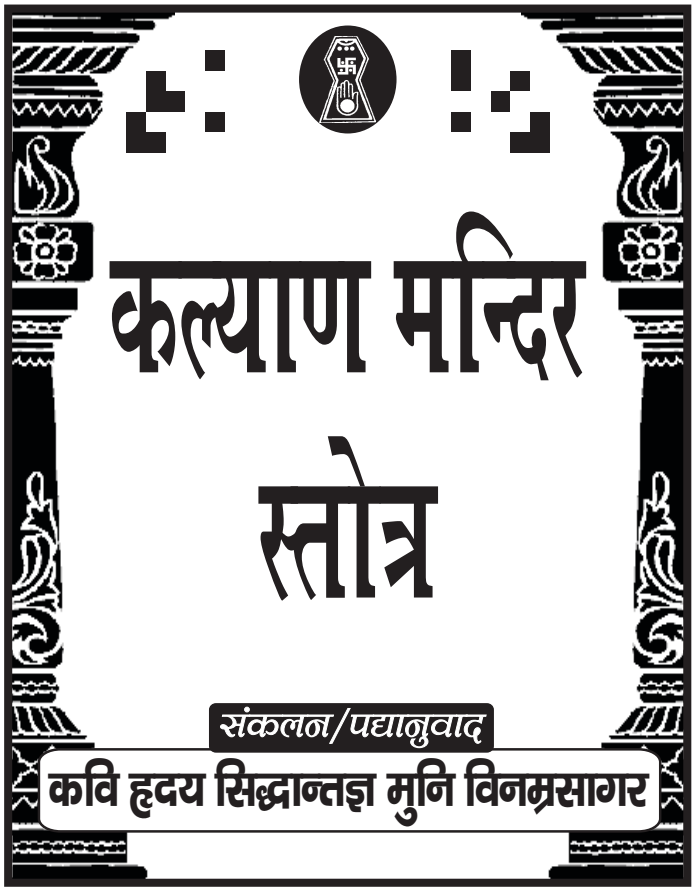

# कल्याण मन्दिर स्तोत्र

संकलन/पद्यानुवाद

**कवि हृदय सिद्धान्तज्ञ मुनि विनम्रसागर**

कृति :

# कल्याण मन्दिर स्तोत्र

शुभाशीष : प्रथम गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज


रचयिता

**प्रखर वक्ता मुनि विनम्रसागर**

संघस्थ – क्षुल्लक 105 श्री विधेयसागर जी

सम्पादन

बा. ब्र. बहिन सुश्री साधना, संगीता

कवर सज्जा – बा. ब्र. रविन्द्र भैया, मुकेश भैया



प्रथमावृत्ति : 2200 प्रति सत्र 2008

प्रकाशक

(☎07580-223344)

कम्प्यूटर डिजाइन एवं मुद्रक – मुकेश जैन 9414555103

आर्यन् एजेन्सीज्

मुकेश मेडिकल स्टोर, अजमेरी गेट, केकड़ी (अजमेर-राज.) फोन 01467-220064 (नि.)



(सर्वाधिकार सुरक्षित)



पुनः प्रकाशन हेतु व्यवस्था राशि – 15/-रु.मात्र


## Namokar Mahamantra

*I bow to all Arihantas.*

*I bow to all Siddhas.*

*I bow to all Acharyas.*

*I bow to all Upadhyayas.*

*I bow to all Saints in the world*

*This Namokar mantra about to destroy all sins.*
*And first is auspicious in the all auspicious*

**Muni Vinamra Sagar**

## णमोकार महामंत्र

**णमो अरिहंताणं**

**णमो सि(ाणं**

**णमो आयरियाणं**

**णमो उवज्झायाणं**

**णमो लोए सव्व साहूणं**

ऐसो पंच णमोयारो
सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवई मंगलं।।

## अभीप्सित कार्य सि(दायक

**कल्याणमंदिर - मुदार - मवद्यभेदि,**
**भीताभयप्रद - मनिंदित - मंघ्रिपद्मम्।**
**संसारसागर निमज्ज - दशेषजन्तु,**
**पोतायमान - मभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥1॥**

### अन्वयार्थ

= कल्याणों का मन्दिर (स्थान), = नाना सुखों का प्रदाता, = अवद्यों (पापों) का भेदन करने वाला (पापों का विनाशक), = सर्व सुर–असुरों के द्वारा पूजित होने से प्रशंसनीय, = संसार व दु:खों से भयभीत प्राणियों को अभयदान (जीवनदान) देने वाले, = चारों गतियों में भ्रमण रूप संसार समुद्र में डूबे हुए सब प्राणियों को निकालने के लिए नौका के समान आचरण करने वाले, = जिनेन्द्र भगवान् के, = चरणाविन्द को, = नमस्कार करके (स्तुति करूँगा)



## जाप

[redacted]

### भावार्थ

हे विश्वगुणभूषण! कल्याणों के मन्दिर, अत्यन्त उदार, अपने और पर के पापों के नाशक, संसार के दु:खों से डरने वालों को अभयप्रद अतिश्रेष्ठ, संसार सागर में डूबते हुए प्राणियों के उद्धारक, श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र भगवान् के चरण–कमलों को नमस्कार करके (स्तुति करूँगा) ।।1 ।।

### मंत्र

**ॐ ह्रीं कमठस्य य धूमकेतूपमाय श्री जिनाय नम:**

**कल्याणों के महान मंदिर, करते सारे पाप विनष्ट।**
**अभय शुभम् पद दे भव्यों को, भव भय दूर करें सब कष्ट।।**
**भवि जीवों को पोत समां हैं, जिनवर के द्वय चरण कमल।**
**अति आसक्त भक्ति में होकर, नमूँ करूँ परिणाम विमल।।**



## अभीप्सित कार्य सि(दायक

**यस्य स्वयं सुरगुरु - र्गरिमाम्बुराशे:,**
**स्तोत्रं सुविस्तृत मतिर्न विभुर्विधातुम्।**
**तीर्थेश्वरस्य कमठस्मय-धूमकेतोस्-**
**तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये।।2।।**

### अन्वयार्थ

= गौरव के समुद्र, = जिन पार्श्वनाथ की, = स्तुति, = करने के लिए, = खुद, = विस्तृत (विशाल) बुद्धि वाले, = बृहस्पति भी, = समर्थ, = नहीं हैं, = कमठ के जीव, = (शंबरनामक ज्योतिषी देव) के मान को भस्म करने के लिए अग्नि स्वरूप, = उन पार्श्वनाथ तीर्थंकर का, = निश्चय से, = यह मैं, = स्तवनं, = करूँगा।



## जाप

[redacted]

### भावार्थ

गम्भीरता के समुद्र, जिसकी स्तुति करने के लिए विशाल बुद्धि वाला देवताओं का गुरु स्वयं बृहस्पति भी समर्थ नहीं है, तथा जो प्रतापी कमठ के अभिमान को भस्मीभूत करने के लिए धूमकेतु अर्थात् सपुच्छग्रह (पुच्छलतारा) रूप हैं, उन तेइसवे तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान् का मैं अल्पज्ञ होते हुए भी स्तवन करूँगा ।।2 ।।

### मंत्र

**ॐ ह्रीं कमठस्य य धूमकेतूपमाय श्री जिनाय नम:**

**महागुणी प्रभु! गरिमा सागर! चिन्मय पार्श्वनाथ भगवान्।**
**मान कमठ का भस्म करन को, अग्नि समां है जिनका ध्यान।।**
**सुरगुरु जिनकी थुति गाने में सक्षम नहीं, करे बहुमान।**
**अचरज है हम अल्पबुद्धि से, करते हैं उनके गुणगान।।**

## जल भय निवारक

**सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-**
**मस्मादृशः कथ-मधीश! भवन्त्यधीशाः?**
**धृष्टोऽपि कौशिक-शिशु-र्यदि वा दिवान्धो,**
**रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः?।।3।।**

### अन्वयार्थ

= हे स्वामिन्!, = सामान्य (साधारण) रूप से, = भी तुम्हारे, = स्वरूप का (वास्तविक गुणपर्यायों का), = कथन करने के लिए, = हमारे जैसे अज्ञप्राणी, = कैसे समर्थ, = हो सकते हैं? अर्थात् हमारे जैसे अल्पज्ञ आपके गुणों का कथन करने के लिए समर्थ नहीं हो सकते, = अथवा यह कहना ठीक ही है, = निश्चय से सूर्य के स्वरूप का, = दिन में अन्धा रहने वाला अर्थात् जिनको सूर्य के प्रकाश में दिखता नहीं है ऐसा, = उलूक का बच्चा, = धीठ होता हुआ भी, = क्या, = प्ररूपण कर सकता है अर्थात् नहीं कर सकता है।



## जाप

### भावार्थ

हे सप्तभय विनाशक देव! आपके गुणों का सामान्यरूप से भी वर्णन करने के लिए हम जैसे मन्दबुद्धि वाले पुरुष कैसे समर्थ हो सकते हैं? अर्थात् नहीं हो सकते। जैसे जिसे दिन में स्वयं नहीं सूझता ऐसा उलूक (उल्लू) पक्षी का बच्चा धीठ होकर भी क्या सूर्य के जगमगाते बिम्ब का वर्णन कर सकता है? कदापि नहीं कर सकता ।।3 ।।

### मंत्र

**ॐ ह्रीं त्रैलोक्याधीशाय नमः**

**हे स्वामिन्! तुम गुण वारिधि हो, कैसे हम कह सकते गुण।**
**अल्पबुद्धि है मुझमें, जब वह वृहस्पति कहने नहीं निपुण।।**
**जैसे उल्लू सूर्य किरण का, वर्णन करे, कहे विद्वान।**
**वैसे धृष्ट हुआ थुति करने, पूर्ण न कर सकता गुणगान ।।**



## असमय निधन निवारक

**मोहक्षया-दनुभवन्नपि नाथ! मर्त्यो,**
**नूनं गुणानगणयितुं न तव क्षमेत।**
**कल्पान्तवान्त पयसः प्रकटोऽपि यस्मान्,**
**मीयेत केन जलधे-र्ननु रत्नराशिः?।।4।।**

### अन्वयार्थ

= हे स्वामिन्, = मोहनीय कर्म का क्षय हो जाने से, = आपके गुणों का अनुभव न करता हुआ भी, = मानव (मनुष्य), = निश्चय से तेरे, = गुणों को, = गिनने के लिए, = समर्थ नहीं है अर्थात् आपके गुणों की गणना नहीं कर सकता, = यह कथन ठीक है अर्थात् परमेश्वर के गुणों का कथन करना शक्य नहीं है, यह कहना युक्ति संगत ही है। = क्योंकि, = प्रलयकाल के द्वारा बाह्य कर दिया जाता है जल जिसका ऐसे, = समुद्र की, = प्रकट हुई (बाह्य दृष्टिगोचर होने वाली), = रत्नों की राशि भी, = किसी पुरुष के द्वारा, = गिनी जा सकती है? अर्थात् प्रकट दिखने वाली भी रत्नराशि की गणना कौन कर सकता है?



## जाप

### भावार्थ

हे अनन्तगुणनिधि! जैसे प्रलयकाल के समय सब पानी निकल जाने पर भी साफ दिखने वाले समुद्र के रत्नों की गणना नहीं हो सकती वैसे ही मोहाभाव से प्रतिभासमान मनुष्य द्वारा आपके गुणों की गिनती भी नहीं हो सकती, क्योंकि आपके गुण अनन्तानन्त हैं। ।।4 ।।

### मंत्र

**ॐ ह्रीं सर्वपीड़ा निवारकाय श्री जिनाय नमः**

**मिथ्यामल क्षय होने पर भी, कौन आप गिन सकता गुण।**
**नहीं समर्थ मनुज है कोई, निश्चय से नहिं कोइ निपुण।।**
**प्रलयकाल में पानी के बिन, सागर में रह जाते रत्न।**
**कोइ नहीं गिन सकता उनको, चाहे कितने करे प्रयत्न।।**

## प्रच्छन्न धन प्रदर्शक

**अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ! जडाशयोऽपि,**
**कर्तुं स्तवं लस-दसंख्य-गुणाकरस्य।**
**बालोऽपि किं न निजबाहु युगं वितत्य,**
**विस्तीर्णतांकथयतिस्वधियाम्बुराशेः?।।5।।**

### अन्वयार्थ

= हे स्वामिन्, = जड़बुद्धि वाला अज्ञानी, = भी (मैं), = शोभित उत्तम असंख्यात गुणों की खानि स्वरूप, = तुम्हारा स्तवन, = करने के लिए, = तत्पर हुआ हूँ। ठीक ही है।, = बालक भी, = स्वकीय बुद्धि के अनुसार, = स्वकीय बाहु युगल, = फैलाकर, = समुद्र की, = विस्तीर्णता को, = क्या, = नहीं कहता है? अर्थात् कहता ही है।



## जाप

### भावार्थ

हे गुणगणाधिप! जैसे शक्तिहीन अबोध बालक सहज स्वभाव से अपनी पतली छोटी–छोटी दोनों भुजाओं को पसार कर विशाल समुद्र के विस्तार (फैलाव) को बतलाने का असफल प्रयत्न करता है, ठीक वैसे ही हे भगवन्! मैं महामूर्ख तथा जड़ बुद्धि वाला होकर भी अपूर्व अपरिमित गुणों से सुशोभित आपके सच्चिदानन्द स्वरूप की अमर्यादित महिमा का वर्णन करने के लिए उद्यत हो गया हूँ ।।5 ।।

### मंत्र

**ॐ ह्रीं सुख विधायकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः**

**मंदबुद्धि होकर भी तेरे, गुण अनंत मैं बता रहा।**
**हे स्वामिन्! भक्ती वश तेरी, थुति हो तत्पर, जता रहा।।**
**क्या लघु बालक अल्पबुद्धि से करता नहीं जलधि विस्तार।**
**द्वय हाथों को विस्तृत करके, शक्ति बिना कहता आकार।।**



## सन्तानसम्पत्ति प्रसाधक

**ये योगिना-मपि न यान्ति गुणास्तवेश!**
**वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः।**
**जाता तदेव - मसमीक्षित कारितेयं,**
**जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि।।6।।**

### अन्वयार्थ

= हे स्वामिन् तुम्हारे, = जो गुण हैं वे, = योगिश्वरों के भी, = कथन में नहीं आते हैं, = उन गुणों के कथन में मेरी, = सामर्थ्यता कैसे, = हो सकती है, = इसलिए ही हे देव! इस प्रकार, = यह मेरी स्तुति करने की प्रवृत्ति, = अविचारित क्रिया, = हुई है अथवा, न = निश्चय से, = पक्षीगण भी, = स्वकीय वाणी से, = बोलते हैं। उसी प्रकार मैं भी बोलता हूँ।



## जाप

### भावार्थ

हे गुणगणालंकृत देव! आपके जिन अपरिमित गुणों का वर्णन करने में बड़े–बड़े योगी और धुरन्धर विद्वान् तक अपने आपको असमर्थ मानते हैं, उन गुणों का वर्णन मुझ जैसा अल्पज्ञ मानव कैसे कर सकता है? अतः स्तवन प्रारम्भ करने के पूर्व अपनी शक्ति को न तौल कर मैंने आपकी जो स्तुति प्रारम्भ की है, वास्तव में मेरा यह प्रयत्न बिना विचारे ही हुआ फिर भी मानव जाति की वाणी बोलने में असमर्थ पशु–पक्षी अपनी ही बोली में बोला करते हैं, वैसे ही मैं भी अपनी बोली में आपकी प्रभावशालिनी पुण्यदायिनी स्तुति करने के लिए प्रवृत्त हुआ हूँ ।।6 ।।

### मंत्र

**ॐ ह्रीं अव्यक्त गुणाय श्री जिनाय नमः**

**बड़े–बड़े ऋषि और तपस्वी, सक्षम नहिं गाने गुणगान।**
**हे प्रभु! हम कैसे गा सकते, कितना तुझमें दर्शन ज्ञान।।**
**मेरे द्वारा किया गया यह तव स्तवन सुख का आधार।**
**परिणति अपनी दरशाई है, लेकिन लगती बिना विचार।।**

## अभीप्सित जनाकर्षक

**आस्ता-मचिन्त्य महिमा जिन! संस्तवस्ते,**
**नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति।**
**तीव्रातपोपहत पान्थ - जनान्निदाघे-**
**प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि।।7।।**

### अन्वयार्थ

= हे कर्मरूपी शत्रुओं को जीतने वाले जिनेश्वर देव!, = अचिन्त्य महिमा वाले आप, = स्तोत्र तो दूर रहे, = आपके नाम का उच्चारण भी, = संसारी प्राणियों को संसार से, = रक्षा करता है अर्थात् संसार दुःखों से बचाता है, = ग्रीष्मकाल में, = कमलों से व्याप्त तालाब की, = जलकणों से युक्त, = वायु भी, = तीव्रआतप से उपद्रवित (व्याकुल) राहगीरों को, = संतुष्ट करती है उनके तीव्रताप को दूर कर सुखी करती है।



## जाप

### भावार्थ

हे सातिशयनाम्! जैसे ग्रीष्मकाल में असह्य प्रचण्ड धूप से व्याकुल राहगीरों को केवल कमलों से युक्त सरोवर ही सुखदायक नहीं होते, अपितु उन जलाशयों की जल–कण–मिश्रित ठंडी–ठंडी झकोंरे भी सुखकर प्रतीत होती हैं। वैसे ही हे प्रभो! आपका स्तवन ही प्रभावशाली नहीं है, वरन् आपके पवित्र 'नाम' का स्मरण भी जगत के जीवों को संसार के दारुण दुःखों से बचा लेता है। वास्तव में प्रभु के गुणगान और उनके नाम की महिमा अचिन्त्य है ।।7 ।।

### मंत्र

**ॐ ह्रीं भवाटवी निवारकाय श्री जिनाय नमः**

**हे प्रभू! दूर रहे थुति तेरी, नाश करे दुख केवलनाम।**
**महिमा भक्ति अचिन्त्य तुम्हारी, शीतलता देना, यह काम।।**
**गीष्मऋतु में कमल युक्त सर, सुखदायी जो पीड़ित धाम।**
**पर उनकी शीतल वायु भी, देती मनु को सुख स्नान।।**



## कुपितोपदंश विनाशक

**ह्रद्वर्तिनि त्वयि विभो ! शिथिली भवन्ति,**
**जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबन्धाः।**
**सद्यो भुजंगम-मया इव मध्यभाग-**
**मभ्यागते वन-शिखंडिनि चन्दनस्य।।8।।**

### अन्वयार्थ

= हे भगवन्! तेरे, = हृदयवर्ति हो जाने पर, = प्राणियों के, = सघन कठोर, = भी, = कर्मबन्धन, = क्षणभर में, = शिथिल हो जाते हैं, = जैसे, = मयूर के, = चन्दन के, = मध्यभाग में, = आ जाने पर, = सर्पों की कुण्डलियाँ, = शीघ्र ही शिथिल हो जाती हैं।



## जाप

### भावार्थ

हे कर्मबन्धनविमुक्त जिनेश! जैसे जंगली मयूरों के आते ही मलयागिरि के सुगन्धित चन्दन के सघन वृक्षों में कोंडाराकार लिपटे हुए, भयंकर भुजंगों की दृढ़ कुण्डलियाँ तत्काल ढीली पड़ जाती हैं, वैसे ही संसारी जीवों के मन– मन्दिरों के उच्च सिंहासनों पर आपके विराजमान होने पर आपका 'नाम–मंत्र स्मरण करने पर उनके ज्ञानावरणादि अष्टकर्मों के कठोरतम बन्धन क्षणमात्र में अनायास ही ढीले पड़ जाते हैं ।।8 ।।

### मंत्र

**ॐ ह्रीं कर्मादिबंध मोचनाय श्री जिनाय नमः**

**हे जिन! जिसके उर तुम रहते, वह पावन हो निर्बन्धन।**
**क्षणभर में सब सघनकर्म के, तोड़े वह अपने बंधन।।**
**चंदन तरु पर, कुण्डल के सम, लिपटे सर्प महा विकराल।**
**मिलती जब आवाज गरुड़ की, बंधन ढीले दिखता काल।।**

## सर्प वृश्चक्र विषनाशक

**मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र!**
**रौद्रै-रुपद्रव-शतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि।**
**गो-स्वामिनि स्फुरित-तेजसि दृष्टमात्रे,**
**चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः।।9।।**

### अन्वयार्थ

= हे जिनेन्द्रदेव!, = जैसे, = स्फुरित है तेज जिसका ऐसे, = गायों के मालिक के, = दृष्टिगोचर होने पर, = भागते हुए चोरों के द्वारा, = पशु, = शीघ्र ही, = छूट जाते हैं उसी प्रकार हे भगवन्, = आपको, = देख लेने पर, = मानव, = रौद्र, = सैकड़ों उपद्रवों के द्वारा, = शीघ्र, = छूट जाते हैं।



## जाप

### भावार्थ

हे संकटमोचन! जिस तरह प्रचण्ड सूर्य, पराक्रमी भूपाल तथा बलिष्ट अंगों सहित – गोपालकों के दिखते ही भय से भागते हुए चोरों के पंजे से पशु–धन छूट जाता है उसी तरह हे कृपालुदेव! आपकी वीतराग मुद्रा को देखते ही मानव महा–भयंकर सैकड़ों संकटों से तत्काल छुटकारा पाते हैं ।।9 ।।

### मंत्र

**ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव हरणाय श्री जिनाय नमः**

**तेजस्वी नृप देख चोर, सब माल छोड़ भग जाते हैं।**
**हे प्रभु! हाहाकार मचाते, अपने प्राण बचाते हैं।।**
**वैसे भवि जो दर्शन करते, सभी उपद्रव हों निष्प्राण।**
**तेरा दर्शन महा शक्तिमय, अघ रक्षा करते निज प्राण।।**



## तस्कर भय विनाशक

**त्वं तारको जिन! कथं भविनां त एव,**
**त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः।**
**यद्वा दृतिस्तरति यज्-जलमेष नून-**
**मन्तर्गतस्य मरुतः सकिलानुभावः।।10।।**

### अन्वयार्थ

= हे जिनेन्द्र देव आप, = संसारी प्राणियों को तारने वाले, = कैसे हो सकते हो, क्योंकि, = संसार समुद्र से पार होते हुए। = वे संसारी प्राणी ही, = आपको हृदय में, = धारण करते हुए, संसार समुद्र से पार हो जाते हैं, = संसारी प्राणी ही तुमको तिराकर जाते हैं ठीक है जो, = चर्म पात्र जल में, = तिरता है, = यह शब्द संभावनार्थ में वा पादपूर्ण में है इसका अर्थ है सत्य, वास्तव में, = निश्चय से वह यह, = उस मशक के अंदर, = वायु का ही प्रभाव है।



## जाप

### भावार्थ

हे भवपयोधितारक! जिस तरह अपने भीतर भरी हुई पवन के प्रभाव से चर्म पानी के ऊपर तैरती हुई किनारे लग जाती है, उसी तरह मन–वचन–काय से आपको अपने मन मन्दिर में विराजमान कर आपका ही रात दिन चिन्तवन करने वाले भव्यजन संसार सागर से पार लग जाते हैं। ।।1 0 ।।

### मंत्र

**ॐ ह्रीं भवोदधि तारकाय श्री जिनाय नमः**

**मशक भरी वायु तो, वह भी डूब न सागर पाती है।**
**सागर में रह करके भाई, वारिधि से तिर जाती है।।**
**हे प्रभु आप भरे जिस उर में, वह भव डूब न पाता है।**
**तारन हारे तुम हो लेकिन मनु भव में तिर जाता है।।**